भजन

पिया जी तुम जीते हम हारे
जैसा चाहो नाच नचावो डोरी हाथ तुम्हारे

1– अर्श में हक जुदे जानती थी
इश्क बड़ा है अपना मानती थी
बाजी इश्क की हारी

2– आशिक बन कर तुमने दिखाया
रूहों की खातिर कष्ट उठाया
सुख दिए अर्श के सारे

3– हार गई हूं पिया विनती करते
सुख देओगे कब निजघर के
तुम हो धनी हमारे